Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852; Impact Factor: RJIF 5.44
Received: 10-09-2020; Accepted: 25-09-2020; Published: 11-10-2020
Volume 1; Issue 2; 2020; Page No. 26-28

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बुनियादी शिक्षा

अभिमन्यु वशिष्ठ
प्राचार्य सिद्धेश्वर विनायक शि. प्रशि. महाविद्यालय, धरियावद जिला, प्रतापगढ़, राजस्थान, भारत
गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय, बांसवाड़ा, राजस्थान, भारत

प्रस्तावना

स्वतंत्रता प्राप्ति से इतना लम्बा समय गुजर जाने के बाद भी आज जब हम पीछे मुड़कर देखते है तो लगता है कि भारत की सबसे ज्वलन्त समस्या शिक्षाको सुलझाने में हम अभी पूर्णरूपेण सफल नहीं हुए है। स्वतंत्रता के बाद इसमें उचित परिवर्तन लाना, देष के सामने बड़ी समस्या थी।

अंग्रेजों ने तो अपने साम्राज्य के हितो की रक्षा करने वाली शिक्षानीति अपनायी थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शिक्षाका जो रूप प्रकट होना चाहिए था वह नहीं हुआ। वर्तमान समय में भारतीय शिक्षामें अनेक प्रकार के संकट विद्यमान है। मूल्यों के संकट की बात जग–जाहिर है। उद्देष्यहीनता की समस्या, बेरोजगारी की समस्या तो है ही परन्तु आज की शिक्षाविद्यार्थी को व्यवहारिक जीवन से दूर ले जा रही है। ऐसे में यह प्रष्न महत्वपूर्ण हो जाता है कि वर्तमान परिवेष में हम छात्रों को कौनसी शिक्षादें?

शिक्षा के बेहतर विकल्प के लिए आज बुनियादी शिक्षाको देखा जा रहा है। बुनियादी शिक्षाक्या हैं? वर्तमान समय में इसे किन परिवर्तनों के साथ अपनाया जाना चाहिए? कुछ ऐसे बिन्दुओं पर ही हमें अपनी समझ बनानी होगी। साथ ही इसे वैष्वीकरण और उदारीकरण के सन्दर्भ में देखना होगा। इसके अन्तर्गत शिक्षाके सामाजिक सरोकार, हाषियाकृत समाज की समस्याऐं व उनके सवाल, हाषियाकृत बच्चों की शिक्षाके लिये शैक्षिक विचार, नीतियाँ, कक्षा–कक्ष की प्रक्रियाओं, क्रियाकलापों, षिक्षक–प्रषिक्षण पर पुर्नविचार आदि को बेहतर बनाने के लिए सार्थक प्रयास करने होगें।

बुनियादी शिक्षाको आज हम शिक्षाके बुनियादी सवालों के सन्दर्भ में परिभाषित करने की कोषिष कर रहे है। देष की वर्तमान परिस्थितियों को देखकर लगता है कि जिस शिक्षादृष्टि को लेकर और देष के वातावरण के अनुसार शिक्षाकार्यक्रम बनाकर गांधी जी ने देषवासियों के सामने जिस सन्दर्भ में रखा था, वह लगभग आज हमे उसी रूप में चुनौति दे रहा है।

गांधी जी ने बुनियादी शिक्षाअर्थात नई तालीम षिक्षण योजना को स्वावलम्बी षिक्षण योजना के रूप में प्रस्तुत किया था। जिसके माध्यम से देष के सभी बच्चों को शिक्षादेना संभव होता। परन्तु सरकारी षिक्षण अधिकारियों ने नई तालीम को इस तरह से लागू किया कि यह षिक्षण पद्धति अत्यंत खर्चीली बताई जाने लगी और इस योजना को इस तरह प्रस्तुत किया गया की सरकारें डर गई कि वह इतनी महंगी शिक्षा पद्धति को कैसे चला सकती हैं?

नई तालीम के संदर्भ में यह भ्रामक प्रचार भी किया गया कि यह केवल ग्रामीणों के लिए ही है, इसलिए ग्रामीण क्षेत्रों में ही अधिकांश स्कूल खोले गए तथा शहरी व उच्च, मध्यमवर्गीय बच्चों के लिए तो पुराने स्कूल ही चलते रहे।

नई तालीम विद्यालयों को वह शिक्षण सामग्री या सुविधाएं भी उपलब्ध नहीं कराई गई जो उनके लिए अत्यंत आवश्यक थी। उत्पादित वस्तुओं की बिक्री की कोई व्यवस्था नहीं की गई और शिक्षकों को भी पूरी तरह प्रशिक्षित नहीं किया गया। इस तरह सरकारी स्तर पर नई तालीम को पूरी तरह से अपनाया भी नहीं गया और वही दूसरी और उसका स्वरूप बिगाड़ कर बदनाम करने की क्रिया भी चलती रही। कहीं–कहीं पर प्रचलीत शिक्षा में ही उद्योग को एक विषय के रूप में जोड़कर मान लिया गया की नई तालीम हो गई। असफल होने पर इसे ही नकारा साबित किया गया।

आज हम सभी अनुभव कर रहे हैं कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली दोषपूर्ण है। परंतु शुरुआत कहां से हो और कौन करें? यह किसी की समझ में नहीं आ रहा समाज में शिक्षा के क्षेत्र में इस विकल्पहीनता की स्थिति में बुनियादी शिक्षा ही एक आशा की किरण के रूप में हमें दिखाई देती है।

आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा कौशल विकास, आत्मनिर्भर भारत जैसी बातें कही जा रही है जो कि गांधीजी की नई तालीम का ही मुख्य आधार है। वर्तमान परिस्थिति नई तालीम के लिए अनुकूल है। इसलिए शोधार्थी द्वारा यह आवश्यकता अनुभव की गई की बुनियादी शिक्षा की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सार्थकता का अध्ययन किया जाए।

समस्या कथन

बुनियादी शिक्षा की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सार्थकता : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।

समस्या के उद्देश्य

1. महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन का अध्ययन करना।
2. महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा का अध्ययन करना एवं उसका समीक्षात्मक अध्ययन करना।
3. वर्तमान समय में महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता ज्ञात करना।

परिसीमन

प्रस्तुत शोध केवल महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन एवं बुनियादी शिक्षा की समीक्षात्मक विवेचना एवं वर्तमान परिस्थितियों में इसकी सार्थकता के अध्ययन तक ही सीमित है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में ऐतिहासिक विधि का चयन किया गया है।

विश्लेषण एवं निष्कर्ष

भारत में शिक्षा के क्षेत्र में प्रचलित दोषों से शिक्षा को मुक्त करने तथा उसे देश की आवश्यकताओं के अनुरूप ढ़ालने की आवश्यकता पर महात्मा गांधी ने बल दिया है वह शिक्षा का भारतीयकरण चाहते थे।

उन्होंने शिक्षा के सभी अंगों पर राष्ट्रवाद के संदर्भ में अपने विचार अभिव्यक्त किए हैं। शिक्षा का स्वरूप, अर्थ, शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षण विधियां, पाठ्यक्रम, शिक्षक–शिक्षार्थी संबंध तथा अनुशासन व आध्यात्मिक शिक्षा आदि सभी विषयों में पर्याप्त समृद्ध चिंतन मिलता है। गांधीजी हृदय से आदर्शवादी थे उन्होंने अपने आदर्शों को वास्तविक तथा लाभप्रद बनाने का प्रयास किया था। अतः उनके शिक्षा दर्शन में प्रकृतिवाद, आदर्शवाद तथा प्रयोजनवाद की छाप दृष्टिगोचर होती है प्रकृतिवादी इसलिए कह सकते हैं कि यह बालक को उसकी प्रकृति के अनुसार विकसित करने पर जोर देती है तथा प्रयोजनवादी इसलिए कहा जाता है कि बालक को उसकी रूचि के अनुसार क्रिया करके सीखने पर बल देता है। इस प्रकार उनकी शिक्षा के क्षेत्र में अद्वितीय देन है जो बुनियादी शिक्षा के रूप में भारतीय शिक्षा जगत की महान उपलब्धि है।

शिक्षा शब्द को परिभाषित करते हुए गांधी जी ने स्वयं लिखा है :– ''शिक्षा से मेरा अभिप्राय है बालक और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा में पाए जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का चहुँमुखी विकास।'' साक्षरता न तो शिक्षा का अंत है और न शिक्षा का प्रारंभ यह केवल एक साधन है जिसके द्वारा पुरुष और स्त्री को शिक्षित किया जा सकता है।

गांधी जी की शिक्षा के उद्देश्यों को दो दृष्टियों से देखा जा सकता है दीर्घकालिक एवं तात्कालिक उद्देश्य। दीर्घकालिक उद्देश्य वास्तव में मूल्य विकास की एक सहज प्रक्रिया है तो तात्कालिक उद्देश्य अपने चारों और के परिवेश से समायोजन है इसके अंतर्गत सन्तुलीत व्यक्तित्व का उद्देश्य, जीविकोपार्जन का उद्देश्य, नैतिक और आध्यात्मिक विकास का उद्देश्य, सांस्कृतिक उद्देश्य शामिल है वहीं शिक्षा का सर्वोच्च उद्देश्य परम सत्य या अंतिम वास्तविकता (ईश्वर) से साक्षात्कार करना है।

शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति पाठ्यचर्या से होती है अतः इसका निर्माण ऐसा होना चाहिए कि बालक का सर्वांगीण विकास संभव हो सके। गांधी जी ने ''क्रिया प्रधान'' पाठ्यक्रम पर बल दिया है। बेसिक क्राफ्ट, कृषि कार्य, लकड़ी का कार्य, धातु का काम, गत्ते का काम, कताई–बुनाई, कोई न कोई हस्तशिल्प बालक को अवश्य आना ही चाहिए। शिक्षण का माध्यम मातृभाषा होना चाहिए। क्राफ्ट के अलावा उन्होंने बालक के सर्वांगीण विकास हेतु गणित सामाजिक विज्ञान के विषयों एवं स्वास्थ्य सामान्य विज्ञान के विषयों को भी आवश्यक माना साथ ही संगीत ड्राइंग जैसे विषय भी पाठ्यक्रम में रखें। बालिकाओं के लिए गृह–विज्ञान विषय को उपयुक्त समझा।

शिक्षण पद्धति की दृष्टि से गांधीजी ''स्वक्रिया द्वारा सीखना'' ''स्वअनुभव द्वारा सीखना'' पर बल देते थे। तथा ज्ञान को समग्र रूप से प्रदान करने के लिए ''समन्वय विधि'' या ''समवाय विधि'' को महत्वपूर्ण मानते थे। 'हस्तकला' को केंद्र मानकर सभी विषयों की शिक्षा दी जानी चाहिए। मन, वचन एवं कर्म में एक समन्वय होना जरूरी है।

गांधीजी के शिक्षा दर्शन में शिक्षक एक आदर्श कर्म में पथ प्रदर्शक है जो एक मनोवैज्ञानिक की तरह बालक के मनोभावों के अनुसार शिक्षा की व्यवस्था करता है।

बालक की आरंभिक शिक्षा

गांधीजी ने बालक की आरंभिक शिक्षा को अधिक महत्व दिया है उनका कहना है कि :– ''जिन संस्कारों का विकास बालक में 5 वर्ष तक किया जाए, उन सभी का विकास आगे चलकर सौ अध्यापक मिलकर भी नहीं कर पाते हैं।''

गांधीजी प्रचलित शिक्षा को और वास्तविक, कृत्रिम मानते थे जो केवल बुद्धि को प्रशिक्षित करती है। इसका जीवन की परिस्थितियों के साथ कोई संबंध नहीं है। अतः उन्होंने शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन कर बेसिक शिक्षा को जन्म दिया। जिसके निम्नलिखित आधारभूत सिद्धांत है–

1. 7 से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था।
2. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा।
3. शिक्षा हस्तकला उद्योग पर केंद्रित।
4. शिक्षा का आधार स्वावलंबन।
5. ज्ञान एवं इकाई के रूप में।

इस शिक्षा को गांधी जी ने 'नई तालीम' या 'बुनियादी शिक्षा' कहा। इस विचार को 1936 में 'हरिजन' नामक पत्रिका में प्रकाशित करवाया उसके पश्चात 22 अक्टूबर 1937 ईस्वी को 'वर्धा' नामक स्थान पर अपनी ही अध्यक्षता में होने वाली ''अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा परिषद'' में उन्होंने शिक्षा संबंधी विचार व्यक्त किए इसलिए इसे वर्धा शिक्षा योजना भी कहा जाता है।

आज हम शिक्षा में गांधी जी को बिल्कुल भूल चुके हैं। कोठारी शिक्षा आयोग ने अपनी संस्तुति द्वारा बेसिक शिक्षा को लगभग समाप्त कर दिया है। परंतु आशा है कार्यानुभव और समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के रूप में इसकी आत्मा शिक्षा में विद्यमान है।

बुनियादी शिक्षा की समीक्षात्मक विवेचना

सैद्धांतिक रूप में बुनियादी शिक्षा योजना भारत के लिए उपयुक्त शिक्षा योजना थी। जनतंत्र की सफलता तो शिक्षा पर ही निर्भर करती है इसलिए परिस्थितियों को देखते हुए बेसिक शिक्षा 7 वर्ष से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए 'निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा' की व्यवस्था पर बल देती है।

शिक्षा का माध्यम 'मातृभाषा' भी सर्वथा उपयुक्त है क्योंकि जन्म के पश्चात ही बालक इसे सीखने लगता है, इसी में विचार करता है बेसिक शिक्षा का प्रमुख सिद्धांत है संपूर्ण शिक्षा को किसी हस्तकला या उद्योग पर केंद्रित करना। इससे बालकों में न सिर्फ सीखना स्थाई होता है बल्कि वे श्रम के महत्व को भी समझने लगते हैं। उनकी रचनात्मक प्रवृत्ति को क्रियाशील रखने में सहायता मिलती है साथ ही शिक्षा स्वावलंबी बन जाती है क्योंकि बालक अपनी पढ़ाई का खर्च स्वयं निकाल सकता है।

गांधीजी ने शिक्षा में अनिवार्य हस्तकला के सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक उपयोगिता के साथ–साथ उसकी आर्थिक उपयोगिता पर भी विचार किया और उम्मीद व्यक्त की कि बालकों द्वारा बनी हुई वस्तुओं के विक्रय से होने वाले लाभ से कम से कम अध्यापकों का वेतन तो निकलना ही चाहिए।

गांधीजी ''आत्मनिर्भरता'' और ''स्वायत्तता'' को ज्यादा महत्व देते थे तथा स्कूलों को आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे ताकि वे राजनीतिक रूप से स्वतंत्र हो। गांधीजी की बुनियादी शिक्षा वास्तव में उनके आदर्श समाज की छवि को साकार करती है। जो कि छोटे आत्मनिर्भर ग्रामीण समुदायों से बना है। और देश के नागरिक भी आत्मसम्मान और उदारता के गुणों से परिपूर्ण है।

बुनियादी शिक्षा उद्योग की शिक्षा ना होकर उद्योग द्वारा शिक्षा होती है जिसका पाठ्यक्रम बालकों की रुचि, योग्यता एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर बनाया गया है। बालक को प्रधानता देने के कारण बाल केंद्रित शिक्षा की संज्ञा भी दी जाती है। बुनियादी शिक्षा सामाजिक एवं सांस्कृतिक आधार की दृष्टि से भी उपयुक्त है क्योंकि इससे समाज में बेकारी, बेरोजगारी की समस्या दूर होती है तथा सामाजिक उन्नति की ओर से समाज अग्रसर होता है साथ ही बालक संस्कृति को सहेजने में भी अपना योगदान देता है।

बुनियादी शिक्षा में धार्मिक शिक्षा को कोई स्थान नहीं दिया गया है। लेकिन बुनियादी शिक्षा राष्ट्रीय सभ्यता संस्कृति के नजदीक थी साथ

ही साथ सामुदायिक जीवन के आधारभूत व्यवस्थाओं से जुड़ी हुई थी तथा सीखे हुए आधारभूत षिल्प के द्वारा व्यक्ति अपने जीवन का निर्वाह कर सकता था अतः यह शिक्षा हमारे जीवन की बुनियाद या आधार से जुड़ी हुई थी इसलिए इसका नाम बुनियादी या आधारित शिक्षा रखा गया।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बुनियादी शिक्षा

गांधी जी द्वारा भारतीय जीवन को दृष्टिगत रखते हुए वातावरण के अनुसार ऐसी शिक्षा योजना प्रस्तुत की गई जिसे कार्य रूप में परिणीत करने से भारतीय समाज में एक नया जीवन आने की संभावना है। गांधी जी द्वारा प्रतिपादित शिक्षा के सिद्धांत जैसे बाल को एवं बालिकाओं को निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा दी जाए। आज हम देखते हैं कि देश के समस्त वर्गों को शिक्षित करने हेतु कई तरह के प्रयास किए जा रहे हैं। निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के लिए कई योजनाओं का निर्माण किया गया है ताकि अधिक से अधिक बालकों को शिक्षा प्राप्त हो सके। भारत में जनतंत्र को सफल बनाने के लिए सभी का शिक्षित होना आवश्यक है। शिक्षा के अभाव में एक स्वस्थ समाज का निर्माण असंभव है।

आज युवाओं के पास कई तरह की डिग्रीयाँ है परंतु रोजगार नहीं है अतः गांधी जी ने बहुत वर्ष पहले ही इस समस्या को इंगित कर दिया था और उन्होंने बुनियादी शिक्षा के अंतर्गत उद्योगों पर आधारित शिक्षा पर बल दिया ताकि बालक किसी न किसी हस्तशिल्प को सीख कर आत्मनिर्भर बन सकें। बेरोजगारी से मुक्ति प्राप्त कर सके। वर्तमान में अब व्यवहारिक शिक्षा तथा व्यावसायिक शिक्षा पर बल दिया जा रहा है। जिससे देश की आवश्यकताओं के अनुरूप प्रभावी ढंग से क्रियान्वयन की आवश्यकता है।

गांधीजी का मानना था कि मेरे प्रिय भारत में बच्चों को 3 ॅ शिक्षा अर्थात ्रमंकए ्रदकए ्रमंतज की शिक्षा दी जाए ताकि वे स्वावलंबी बने और इस देश को मजबूत बनाने में अपना योगदान दे सकें। गांधीजी शिक्षा के स्वावलंबन की बात करते हैं जो कि वर्तमान में अनुकरणीय है। उनकी इच्छा जितना संभव हो सके स्कूलों को आत्मनिर्भर बनाने की थी उसके दो कारण है पहला भारत जैसे गरीब देश में सभी बच्चों को शिक्षा देना संभव नहीं हैं, स्कूल राज्य पर निर्भर होंगे तो सरकार का सीधे–सीधे उनमें हस्तक्षेप होगा। उनका यह दृष्टिकोण वर्तमान में भी अपनाये जाने योग्य हैं गांधीजी बालकों में मानवीय गुणों का विकास करने पर बल देते थे जिसकी आज भी प्रासंगिकता है क्योंकि आज जो विनाश और तबाही फैल रही है वह मनुष्यों में मानवता की कमी के कारण बढ़ती ही जा रही है। गांधीजी ने शारीरिक श्रम का सम्मान किया तथा क्रिया या स्वयं करके सीखने पर बल दिया क्योंकि इस प्रकार सीखा हुआ ज्ञान स्थाई होता है जो हर क्षेत्र के लिये आवश्यक है। गांधी जी ने धर्म की शिक्षा का बहिष्कार किया क्योंकि उन्हें भय था कि जिन धर्मों की शिक्षा दी जाती है या पालन किया जाता है वे मेल के स्थान पर झगड़े उत्पन्न करते हैं वर्तमान स्थिति भी इस बात की समर्थक है। गांधीजी ने वर्गविहीन, शोषणविहीन, सर्वोदयी समाज की स्थापना के लिए शिक्षा को आवश्यक बताया जो वर्तमान में भी प्रासंगिक है। आज समाज में शोषण, घृणा स्वार्थ सिद्धि जैसे कुधारणा के कारण मारकाट, विनाश तथा मानवता का हनन हो रहा है ऐसे में गांधीजी के शिक्षा संबंधी विचार प्रकाश स्तम्भ है।

गांधीजी की ''स्वराज्य'' और ''स्वदेशी'' की अवधारणा शिक्षा व्यवस्था से भी जुड़ी थी जिसे वर्तमान में भी अपनाए जाने की आवश्यकता है। गांधीजी की बुनियादी शिक्षा वास्तव में उनके आदर्श समाज की छवि को साकार करती है जो छोटे आत्मनिर्भर समुदाय से बना है। और जिसके आदर्श नागरिक आत्मसम्मान और उदारता के गुणों से परिपूर्ण है यह एक ऐसी शिक्षा है जिसमें व्यक्ति को ध्यान में रखा गया है साथ ही ये व्यक्तियों के बीच सहयोग पर निर्भर है। गांधी जी के द्वारा दिए गए शिक्षा के सिद्धांत, उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि आज भी बालक तथा बालिकाओं, विद्यालय तथा समाज के लिए उतने ही आवश्यक है जितने पहले। बुनियादी शिक्षा समस्त स्थाई बातों से संबंध रखती है तथा बालकों को स्वावलंबी बनाने में भी सहायक है। यह बालकों के शारीरिक, मानसिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास में काफी उपयोगी सिद्ध हुई है। आज के वैज्ञानिक युग में गांधी जी के सत्य, अहिंसा, प्रेम, उदारता जैसे सिद्धांत अव्यवहारिक लगते हैं परंतु यदि मानवता को तीसरे विश्व युद्ध के विनाश से बचाना है तो गांधीजी के सिद्धांतों को अपनाना आवश्यक है जिससे विश्व में बढ़ रही आर्थिक विषमता का भी अंत हो जाएगा।

गांधीजी की बुनियादी शिक्षा का दर्शन और पाठ्यक्रम सामाजिक परिवर्तन का कार्यक्रम था। उनके विचार जितने प्रासंगिक व व्यवहारिक 1947 से पहले व 1947 में थे, आज भी काफी महत्वपूर्ण एवं शाश्वत महत्व के हैं। इसी संदर्भ में प्रोफेसर हुमायूं कबीर ने लिखा है ''राष्ट्र के लिए गांधी जी की अनके देनों में से नवीन शिक्षा के प्रयोग की देन सबसे महान है।''

सन्दर्भ सूची

1. पाण्डेय, डॉ. रामषकल, ''शिक्षाके दार्षनीक एवं समाजषास्त्री पृष्ठभूमि'', श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2. पचौरी, डॉ. गिरीष, ''उदीयमान भारतीय समाज में षिक्षक'', लायल बुक डिपो, मेरठ।
3. बिहारी, एल. आर, ''शिक्षाके दार्षनीक एवं समाजषास्त्रीय सिद्धांत'', रस्तोगी पब्लिकेषन, मेरठ।
4. पाण्डेय, डॉ. रामषकल (2014), ''विष्व के श्रेष्ठ षिक्षाषास्त्री'', श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
5. व्यास, डॉ. भगवतीलाल (2016), ''समकालिन भारत और षिक्षा'', राधा प्रकाषन प्रा. लि., आगरा।
6. पाठक, डॉ. पी.डी. (2014), ''उदीयमान भारतीय समाज एवं षिक्षा'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
7. सिडाना, डॉ. अषोक, ''समकालिन भारतीय समाज एवं षिक्षा'', आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
8. चौबे, डॉ. सरयू प्रसाद, ''शिक्षाके दार्षनिक एवं सामाजिक आधार'', प्रिमियर प्रिन्टिंग प्रेस, रामनगर, सोडाला, जयपुर।
9. रस्तोगी, डॉ. प्रवीण, ''समकालीन भारत और षिक्षा'', स्टार पब्लिकेषन, आगरा।